

श्री अनिरुद्ध चलीसा

॥ हरि ॐ ॥

# श्री अनिरुद्ध चलीसा

श्री अनिरुद्ध चलीसा

१

# दोहा

श्रीसद्गुरुसुमिरनबल  
सब कछु करत सुहाई ।  
अनिरुद्ध नाम की रत्न लगाई  
टूट गई दुख की डोरी ॥



जय अनिरुद्ध पूरण अवतारा ।  
जय गोविंद परमसुखधामा ॥१॥  
जय नंदारमणा बलवंता ।  
रं रं रं रं जय अभिरामा ॥२॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

४

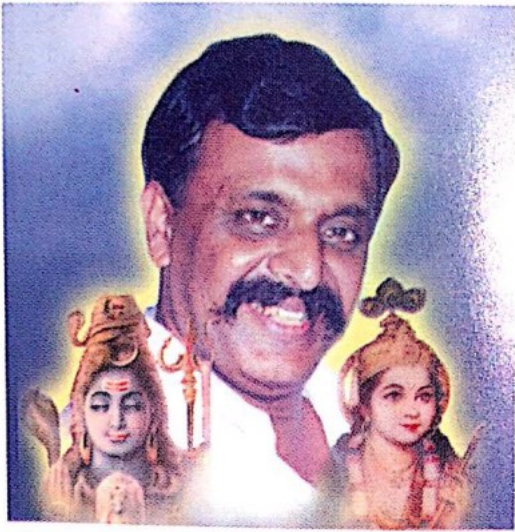
रात दिवस अनिरुद्ध धुन गाँऊ ।  
साथ में लायो सुचितसो दाऊ ॥३॥  
सब रिषिजन मिल जपत महेशु ।  
गोपगोपीजन गात रमेशु ॥४॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

५

कार्तिकमास की पूरणमासी ।  
प्रगट भयो जै जै त्रिपुरारि ॥५॥  
पूरणशक्ति सर्वसुखखानी ।  
दयाकृपाकर बल का दानी ॥६॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

६

गोपिनाथजी दर्शन पावत ।  
श्रीविठ्ठल के चरणा लागत ॥७॥  
स्वामीकृपा से जप रट चालत ।  
बंश तुम्हारे है प्रभु आवत ॥८॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

७

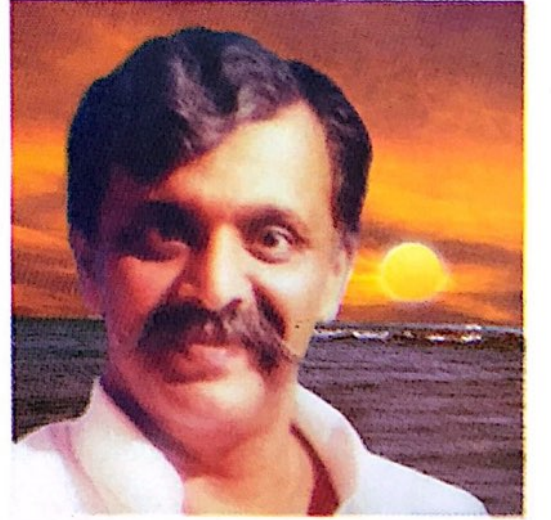
पाय आशिषा वृद्ध अपारा ।  
कहत कहानी निजकुलदारा ॥९॥  
कुल अपने है विठ्ठल आवत ।  
निरगुण से जब सगुण प्रकाशत ॥१०॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

८

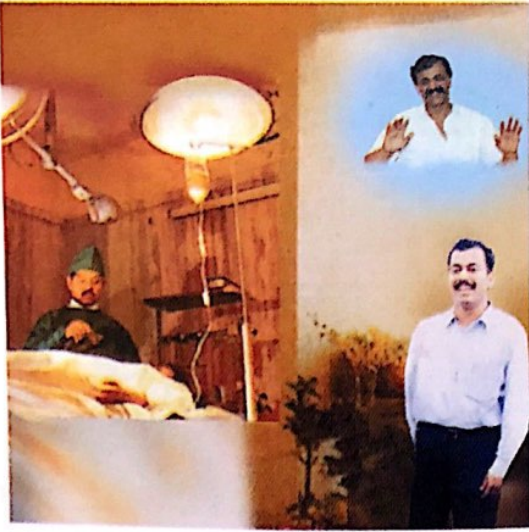
श्यामल रूप मुनिजन सेवि ।  
द्वार खडै नौ निधी की देवि ॥११॥  
भाल चंद्रमा सोभत नीका ।  
सहस सूरज परभा हो फीका ॥१२॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

९

भगत ने जबहि नाम पुकारा ।  
तबहि बापू दुःख निवारा ॥१३॥  
क्रिपा महान तुमसम नाही ।  
राजा रंक भेद नहीं पाई ॥१४॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

१०

साईनिवास में परगट ग्वाला ।  
हेमाड्या की अंतिम ज्वाला ॥१५॥  
पूजन मीनाभाभी कीन्हा ।  
सद्गुरुरूप में दरसन दीन्हा ॥१६॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

११

सुरगणसहित इंद्र करी वंदन ।  
भवभयनाशन खलदलमर्दन ॥१७॥  
सूरजवंशी राम धराधर ।  
चक्रपाणि हरि सद्गुण आगर ॥१८॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा ————— १२

नाम की सेज प्यार की माला ।  
न्हिदय सिंहासन बसत अकाला ॥१९॥  
पुरुषार्था कलजुग भूल जाई ।  
जुईगाँव बस काज दिखाई ॥२०॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा ————— १३



पंचपुरुष श्रद्धा बतलाई ।  
धरमचक्र रख शुरु लड़ाई ॥२१॥  
भारतवास की गौ जो माता ।  
तुम बन खडे गौ के त्राता ॥२२॥



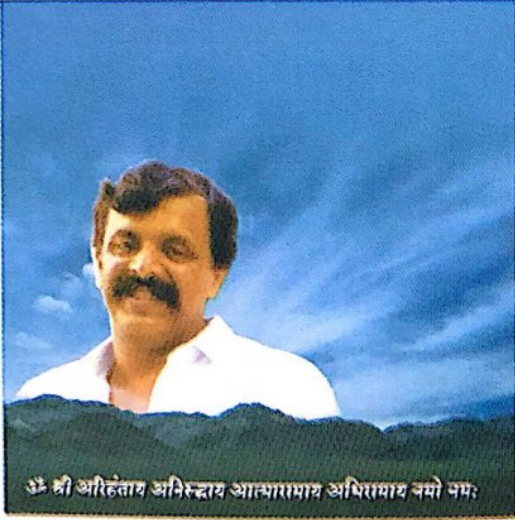
श्री अनिरुद्ध चलीसा ————— १४

नाश अधर्मा पालन धर्मा ।  
यही कारण अवतारण वर्मा ॥२३॥  
धरम ते भगति, जोग ही नामा ।  
ज्ञान ते दर्शन अनिरुधधामा ॥२४॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा ————— १५

राम विराम सुखद अभिरामा ।  
कलिमलभंजक अनिरुध नामा ॥२५॥  
जगत में एक प्राणपती बापू ।  
तासु बिमुख किमी लह विश्रामू ॥२६॥



ॐ श्री अहिंसाय अनिरुद्धाय आत्मारामाय अभिरामाय नमो नमः

श्री अनिरुद्ध चलीसा

१६

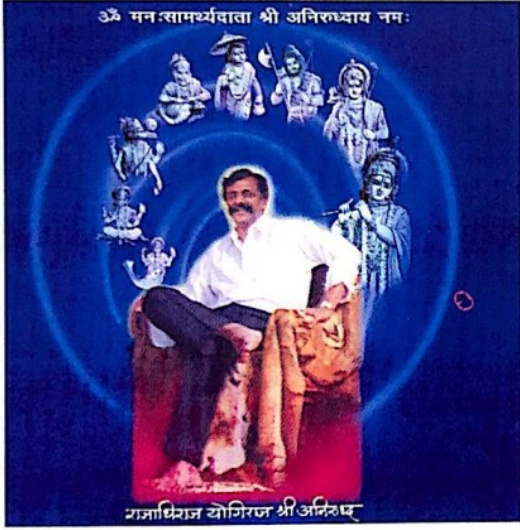
बापू नामसम बल कछु नाही ।  
रिपु बल नाश करइ छनमाही ॥२७॥  
महापापी जब नाम सुमिरहि ।  
जोर अपार दुखसागर तरहि ॥२८॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

१७

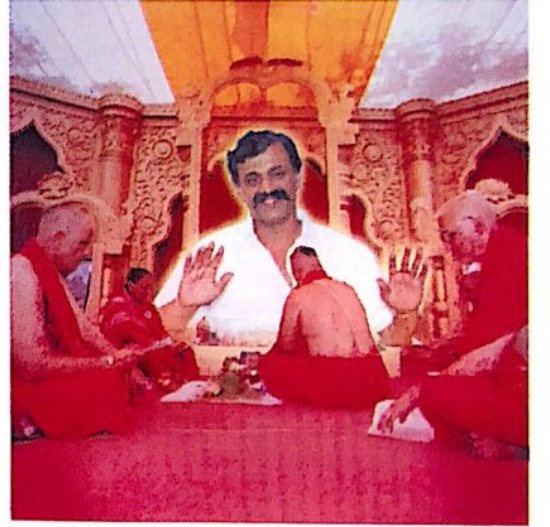
निज इच्छा अनिरुध अवतरइ ।  
धरम प्रेम आनंदन लागी ॥२९॥  
सेवा करबे वो बड भागी ।  
चरम कृपालु बापू अनुरागी ॥३०॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

१८

बापू नामबिनु करम अधूरा ।  
श्रीदर्शन बिनु अन्न ही जहरा ॥३१॥  
कोई मनोरथ बड मन माही ।  
प्रयास करत पर फलवत नाही ॥३२॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

१९

धीर धरहु ना होऊ उदासा ।  
सब मिली जाऊ अनिरुधपासा ॥३३॥  
अनिरुध नाम प्रफुल्लित गाता ।  
टरतहि पीड रोग दूर जाता ॥३४॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

२०

देख चरण सुमंगलमूला ।  
जानऊँ बापू भगति अनुकूला ॥३५॥  
परबत सम बडौ मम भागु ।  
घोर पाप मालिक अनुरागु ॥३६॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

२१

सदैव सरनागत हितकारी ।  
करि रच्छण भवभयमलहारी ॥३७॥  
बापू भगति को कहँऊ बखानी ।  
सहज मार्ग जश पावहि प्राणी ॥३८॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

२२

अनिरुद्ध गावत पुलक सरीरा ।  
गद्गद् बानी अँखी बह नीरा ॥३९॥  
बापू चरणधूली मोहे अतिप्रेमा ।  
तन मन धन सेवा द्विढ नेमा ॥४०॥



श्री अनिरुद्ध चलीसा

२३

# दोहा

अनिरुध चलीसा स्तोत्र यह इक मंत्र महान अपार ।  
सर्ब कामना पूरन प्रति व्यर्थ बचन ना जाय ॥  
पिपा निरबुद्ध सहज जड, ना जानै जोग तप नेम ।  
बापू क्रिपा नहि पाँऊ तसि, जसि चरणन्ही प्रेम ॥

नंदापति अनिरुद्ध की जय

चक्रधर चिदानंद की जय

बोलो भाय दाँऊ सुचित की जय जय जय

